International Journal of Jyotish Research: 2017; 2(2): 26-27

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2017; 2(2): 26-27
© 2017 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 03-05-2017
Accepted: 06-06-2017

कामिनी तिवारी
डी–52, प्रेम कॉलोनी, नेहरू नगर, पानीपेच, जयपुर, भारत।

Correspondence
कामिनी तिवारी
डी–52, प्रेम कॉलोनी, नेहरू नगर, पानीपेच, जयपुर, भारत।

अथर्ववेद में औषधियों का महत्त्व

कामिनी तिवारी

प्रस्तावना

''शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्'' धर्म के साधक शरीर के आरोग्य हेतु वेदों में वर्णन प्राप्त होते है। अथर्ववेद प्राणिशरीर के स्वस्थ रहने की आवश्यकता का प्रतिपादन करते हुये मानव के लिए स्वास्थ्य चेतना का मार्ग प्रशस्त करता है। अथर्ववेद के प्रणेता ऋषि अथर्वा कहते है –

''शं मे परस्मै गात्राय शमख्त्ववराय मे।
शं मे चतुर्भ्यो अंगेभ्यः शमस्तु तन्वे इमम।''

रोग चाहे कोई सा हो स्वस्थ होने के लिए सूर्य रश्मियों के सेवन को सर्वोत्तम बताया गया है। प्रातः एवं सायंकाल सूर्य की किरणें तिरछी पड़ने से रक्त वर्ण हो जाती है तथा शीतल मन्द सुगन्ध पवन के सम्पर्क से वे रोगापहारक हो जाती है अतः प्रातः या सायं मानसिक एवं शारीरिक रोगी को सूर्य किरणों के सेवन, वायु के सेवन एवं औषधि के सेवन से लाभ प्राप्त होने की संभावना अन्य कालखण्डों की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ जाती है। सूर्य की किरणों के सेवन से रूधिर संचार तन्त्र सशक्त हो जाता है अतः शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है, अतः कहा है :–

अनु सूर्यमुदयतां हृदद्योतो हरिमा च ते
गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परि दध्मसि।

अथर्ववेद रोग चिकित्सा को दो रूपों में प्रतिपादित करता है – अन्तश्चिकित्सा एवं बाह्य चिकित्सा। अन्तश्चिकित्सा वह है जिसमें रोगी को खाने के लिए औषधि दी जाती है। वह औषधि शरीर के भीतर प्रवेश कर प्राणी को स्वस्थ बनाती है जबकि बाह्य चिकित्सा वह है जिसमें किसी औषधि को प्राणि शरीर में प्रवेश नहीं कराया जाता अपितु शरीर के बाहरी हिस्से पर ही उसका प्रभाव होता है, जैसे बाह्यांगों पर लेप इत्यादि करना।

अथर्वा ऋषि कहते है कि औषधि का जन्म रात्रि को हुआ। चन्द्र किरणों ने उसे पुष्ट किया अतः सूर्योदय से पूर्व औषधि परिपुष्ट रहती है। सूर्योदय होते ही औषधि लेना श्रेष्ठ होता है। वेद में सूर्य की किरणों से चिकित्सा करके पीलिया आदि रोगों के निवारण का उपदेश भी किया गया हैं एक मंत्र में कहा गया है कि सूर्य की किरणों के सेवन से हृदय के रोग और उनसे जन्य हृदय की पीड़ा भी शान्त हो जाती है। इस पद्धति को सूर्य चिकित्सा कहा जाता है।

वेद में अनेक स्थानों पर ऐसे मंत्र और सूक्त आते है जिनमें ''आपः'' अर्थात जलों को गुणकारी औषधि के रूप में वर्णित किया गया है। एक सूक्त में जलों में अमृत का निवास कहा गया है। जल अमृत के समान निरोगता, स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन प्रदान करने वाला कहा गया है। अन्यत्र जलों में सब औषधियों का निवास कहा गया है। मंत्र का भाव यह है कि आवश्यकतानुसार रोगों का शीतल जल और गर्म जल का उपचार करके रोगों को दूर किया जा सकता है। एक अन्य स्थल पर जलों को चिकित्सकों का भी चिकित्सक बताया गया है।

अथर्ववेद में अनेक औषधियों का भी वर्णन किया गया है जो विभिन्न रोगों का निवारण करने में प्रयुक्त होती है।

पण्डित देवदत्त शास्त्री ने ''औषधि'' शब्द की परिभाषा इस प्रकार की है।

औषधि में ''औष'' का अर्थ ''रस'' होता है जो औष, अर्थात रस को धारण करें वह औषधि है। रसप्रधान पदार्थ (औषधि) शरीर और मन के दोषों व विकारों आदि को दूर करता है। उद्दीपन, पाचन, ओज, शक्ति, ऊर्जा आदि को बढ़ाने वाली और लेपन–बन्धन में काम आने वाले रसायन को औषधि कहते है।

अथर्ववेद में अनेक औषधियों का वर्णन किया गया है जो विभिन्न रोगों का निवारण करने में प्रयुक्त होती है। एक स्थान पर ''पृश्निपर्णी'' नामक औषधि का वर्णन है –

''पृश्निपर्णी'' को हिन्दी में ''पिठवन'' के नाम से जाना जाता है। यह एक क्षुप जाति की वनस्पति है। औषधि में इसकी जड़ काम में आती है। यह औषधि त्रिदोष नाशक, वीर्य जनक, गरम, मधुर, सारक तथा दाह, ज्वर, रक्तातिसार, तृषा और वमन को दूर करने वाली होती है। यह कफ नाशक और प्रसूति सम्बन्धी रोगों में अर्थात इस वनस्पति को दूध के साथ गर्भवती स्त्री को सातवें महीने में देने से गर्भपात का भय नहीं होता।

चतुर्थकाण्ड के बारहवें सूक्त में ''रोहणी'' औषधि का वर्णन आता है। यह औषधि तलवार या धारदार शस्त्र से अथवा पत्थर की चोट से घाव हो गया हो या टूटी हुई हड्डियों एवं कटी हुई माँसपेशियों को, त्वचा को जोड़ती है। जिस प्रकार ऋभु रथ के भागों को मिलाकर जोड़ता है।

इसी प्रकार 'पिप्पली' नामक औषधि का वर्णन अथर्ववेद के छठे काण्ड के एक सौ नौवां सूक्त में है। ''पिप्पली'' को हिन्दी में पीपर (पीपलामूल) के नाम से जाना जाता है। पीपर की बेल होती है। इसकी जड़ को पीपलामूल कहते है, यही आयुर्वेद के सुप्रसिद्ध योग त्रिकुटा (सोंठ, मिरच और पीपर) का एक अंग है। आँख में पीपल का आंजन आंजने से रतौधी में लाभ होता है। पीपलामूल के चूर्ण को गुड़ के साथ देने से बहुत दिनों से नष्ट हुई नींद फिर आने लगती है। पीपल और बच के चूर्ण की फऽी देने से आधा शीशी मिटती है। वात विकार एवं उन्माद रोग महाव्याधियों को दूर करती है। निरोगता और दीर्घायु देने वाली है।

इसी प्रकार 'नितत्नी' नामक औषधि का वर्णन छठे काण्ड के एक सौ सैंतीसवां सूक्त में प्राप्त है, महर्षि वीतहव्य मुनि कृष्णकेश के गृह से लाए इस औषधि को महर्षि जमदग्नि ने अपनी कन्या के केशों की वृद्धि के निमित्त इस नितत्नी औषधि को खोदा, यह औषधि तिरछी होकर फैलती है। ये दिव्य औषधि केशों को लम्बे और सुदृढ़ करती है। जो केश गिरते है, जड़ से टूट जाते है, उस दोष को औषधि रस से दूर करते है।

'गूलर' को संस्कृत में औटुम्बर औदुम्बर, उदुम्बर, हेमदुग्धक, जंतुफल, क्षीरवृक्ष के नाम से जानते है। गूलर बड़ पीपल और अंजीर के वर्ग का वृक्ष है। गूलर शीतल, गर्भ रक्षक, व्रण को भरने वाला, मधुर रूखा, कसैला, भारी हड्डी जोड़ने वाला वर्ण की उज्जवल करने वाला तथा कफ, पित्त, अतिसार और योनिरोग को नष्ट करने वाला है। इसकी छाल, कोमल फल स्तम्भक, मध्यम कच्चे फल, पके हुए फल, पत्ते तथा जड़ सभी औषधि के रूप में सेवन किये जाते है। इसकी जड़ में छेद करने से एक प्रकार का मद टपकता है उस मद को लगातार कुछ समय तक लेने से बल बढ़ता है, अर्थात पुष्टिवर्धक है। इसके पत्तों को पीसकर शहद के साथ चटाने से पित्त विकार शान्त होते हैं।

अथर्ववेद के छठे काण्ड का तीसवें सूक्त में 'शमी' का वर्णन है हिन्दी में इसको छोंकर या खेजड़ा कहा जाता है। इसका रस आनंददायक केशोत्पादक तथा वृद्धिकारक है। यह दस्तावर तथा रक्तपित अतिसार, कुष्ठ, बवासीर, श्वास, खाँसी, कफ, भ्रम, कम्प और थकावट को नष्ट करने वाला है। साँप व बिच्छू के विष पर इसका छिलका लाभदायक है शमी को छोडकर अन्य वृक्षों को काटते है, अर्थात् इसको काटना निशेघ है।

निष्कर्षतः

रोग निवारक विभिन्न औषधियों का उल्लेख यह प्रमाणित करता है कि उस समय चिकित्सा विज्ञान अत्यधिक उन्नत अवस्था में थी, आज आवश्यकता इस बात की है कि विविध प्रयोगों के द्वारा प्राचीन ज्ञान को प्रमाणित कर औषधि निर्माण में सहायता प्राप्त की जाए, तभी वह ज्ञान प्रासंगिक हो सकता है।